Hari Bhoomi - 04- January-2024

500 गांवों तक जखनी मॉडल को पहुंचाने की तैयारी

दुनिया का पहला 'जल विवि' समझाएगा पानी की अहमियत

एजेंसी ▶▶ बांदा

बुंदेलखंड के हमीरपुर में दुनिया का पहला जल विश्वविद्यालय लोगों को पानी का महत्व समझाने लगेगा। यह वही बुंदेलखंड है, जहां कभी 'भौरा तेरा पानी गजब करी जाए, गगरी न टूटे चाहे खसम मर जाए' जैसी कहावत यहां के जल संकट की विभीषिका को बताती थी। अब वहीं से देश-दुनिया को पानी की अहमियत बताई जाएगी।

माना जा रहा है कि तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा, अब हमीरपुर में प्रस्तावित जल विवि पानी संबंधी चुनौतियों के समाधान के साथ विज्ञान, अभियांत्रिकी, एकीकृत कर वैश्विक जल संसाधन प्रबंधन व अनुसंधान से नवाचार को बढ़ावा देगा।

1 बुंदेलखंड की बदलेगी तस्वीर

2 खेत पर मेड़, मेड़ पर पेड़ से जल बचाया जा सके

विश्वविद्यालय का पानी की पाठशाला अभियान

बुंदेलखंड के 500 गांवों तक जखनी माडल पहुंचाने की तैयारी है, जिससे 'खेत पर मेड़, मेड़ पर पेड़' से जल बचाया जा सके। हमीरपुर के छेड़ी बसायक मुस्करा निवासी डॉ. रविकांत पाठक द्वारा प्रस्तावित जल विश्वविद्यालय पानी की पाठशाला अभियान के जरिए गांव-गांव तक जल ज्ञान और विज्ञान को पहुंचाएगा। मानक के अनुरूप जमीन की उपलब्धता के साथ ही विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को भी घोषित कर दिया गया है। हमीरपुर के रूरी पारा गांव में 70 एकड़ में प्रयोगशालाएं, अनुसंधान केंद्र, कक्षाएं और छात्रों व शोधार्थियों के लिए हास्टल के साथ आचार्यों के लिए आवास बनेंगे। विश्वविद्यालय में जल विज्ञान, जल अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी, जल प्रबंधन, जल और मानविकी, जल व अंतरिक्ष जैसे विषय पढ़ाए जाएंगे।

Dainik Jagran- 04- January-2024

...ताकि हर व्यक्ति तक पहुंचे जल

जल के बिना जीवन संभव नहीं है। बढ़ती आबादी और खेती की जरूरतों के लिए जल की उपलब्धता भारत के लिए भी एक चुनौती है। इसी को ध्यान में रखकर केंद्र सरकार देश में भूगर्भ जलस्तर को सुधारने के लिए प्राथमिकता के आधार पर काम कर रही है। इसके लिए देश में बड़े पैमाने पर अमृत सरोवर स्थापित किए जा रहे हैं। इससे देश में भूगर्भ जल स्तर को ऊपर लाने में मदद मिलेगी। इसके अलावा पानी की कम खपत वाली फसलों जैसे मोटे अनाज की खेती को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

मिशन अमृत सरोवर

मिशन अमृत सरोवर योजना के तहत देश के हर जिले में 75 सरोवरों का निर्माण और जीर्णोद्धार किया जा रहा है। अब तक देश में 60,000 अमृत सरोवर बनाए जा चुके हैं और 50,000 सरोवर के निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

2024 तक ग्रामीण घरों में नल से जल

भारत सरकार जल जीवन मिशन के तहत वर्ष 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण घर में 55 लीटर प्रति व्यक्ति प्रति दिन के सेवा स्तर पर पीने योग्य नल के पानी की आपूर्ति करने के लिए काम कर रही है।

2,800 सार्वजनिक कुओं, तालाबों और पोखरों के जीर्णोद्धार का लक्ष्य रखा है 2024-25 तक बिहार नगर निगम एवं आवास विभाग ने

2 लाख से अधिक गांव के हर घर में जल जीवन मिशन के तहत पहुंचाया गया पानी

दो लाख मौतें हो रहीं हैं सालाना

वर्तमान में 60 करोड़ लोग जल संकट का सामना कर रहे हैं और पानी की कमी या असुरक्षित जल आपूर्ति के कारण सालाना दो लाख लोग मौत के शिकार हो जाते हैं।

₹14,259 करोड़ खर्च हुए हैं रेन वाटर हार्वेस्टिंग पर

13 करोड़ से अधिक ग्रामीण घरों में आ रहा है शुद्ध जल

9 लाख से ज्यादा आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को मिल रहा है शुद्ध जल

पंजाब में 50 लाख लोगों को होगा लाभ

पंजाब में भूजल स्तर गिरकर गंभीर स्तर पर पहुंच रहा है। पंजाब नगरपालिका सेवा सुधार परियोजना दो बड़े शहरों को स्थानीय नहरों जैसे जल स्रोतों पर जाने में मदद कर रही है। जल आपूर्ति में सुधार से 2026 तक 30 लाख से अधिक लोगों को और 2055 तक 50 लाख अनुमानित आबादी को लाभ होने की उम्मीद है।

70%

नीचे चला गया है 2007 से 2017 के बीच भूजल स्तर अत्यधिक उपयोग की वजह से

82 करोड़ भारतीयों को नहीं मिल रहा पर्याप्त पानी

नीति आयोग का 2018 समग्र जल प्रबंधन सूचकांक (सीडब्ल्यूएमआइ) भारत में जल उपलब्धता की एक अस्थिर तस्वीर दर्शाता है। दुनिया की 17 प्रतिशत आबादी का घर होने के बावजूद, इसके पास दुनिया के मीठे पानी के संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत है। भारत में पानी की कुल मांग 2025 और 2050 में क्रमशः 22 प्रतिशत तक और 32 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है। वर्ष 2050 तक इस मांग का 85 प्रतिशत अकेले औद्योगिक और घरेलू क्षेत्रों से आने की उम्मीद है। क्षेत्रों में, दक्षिण और उत्तर-पश्चिम को अगले दो वर्षों में सबसे खराब स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। लगभग 82 करोड़ भारतीयों की प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता कम है। यानी उनको उनको उतना पानी नहीं मिल रहा है जितना उनको मिलना चाहिए।

120वें स्थान के साथ भारत जल गुणवत्ता सूचकांक में है सबसे निचले पायदान पर

61%

पानी प्रदूषित है भारत में उपलब्ध जल स्रोतों का

Dainik Jagran- 04- January-2024

पानी की खपत-बचत परखेगा स्कोरकार्ड

अजय राय ● नई दिल्ली

जल संरक्षण को लेकर तमाम योजनाएं और प्रयास चल रहे हैं, लेकिन जल की खपत और बचत को परखने या निगरानी का कोई प्रभावी तंत्र अभी नहीं है। एक स्कोरकार्ड विधि बनाई गई है जो शहरों में जल संरक्षण के लिए बेहद उपयोगी है। इसे किसी सोसायटी, भवन या परिसर में लगाकर वहां जल के उपभोग और भविष्य में कितने जल संरक्षण की आवश्यकता है, यह सारी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। साथ ही, यह भी बताया जा सकता है कि जल बचाने की कौन सी विधियां परिसर में कारगर होंगी। यह स्कोरकार्ड वैश्विक जल संरक्षण विशेषज्ञ डा. भक्ति लता देवी के नेतृत्व में तैयार किया गया है। जलस्मृति संस्था की संस्थापक डा. भक्ति लता देवी को हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित समारोह में जलप्रहरी सम्मान प्रदान किया गया है।

परिसरों में त्वरित मूल्यांकन: मूलरूप से महाराष्ट्र की रहने वाली डा. भक्ति लता देवी जल प्रबंधन में पीएचडी और पर्यावरण प्रौद्योगिकी में परास्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुकी हैं। वह आस्ट्रेलिया में रहकर 25 वर्ष तक जल संरक्षण पर कार्य कर चुकी हैं। पांच वर्ष पहले भारत आकर जल संरक्षण पर कार्य आरंभ किया है। उनका कहना है कि यह स्कोरकार्ड विधि शहरों में आवासीय और वाणिज्यिक परिसरों में जल संरक्षण स्थिति का साक्ष्य आधारित त्वरित मूल्यांकन प्रदान करती है। इससे समझा जा सकता है कि किसी परिसर में भूजल दोहन या जल का उपयोग ग्रीन जोन में है या रेड अथवा यलो जोन में। इसके साथ ही इस विधि के माध्यम से यह भी तय किया जा सकता है कि बेहतर जोन में जाने के लिए क्या उपाय करने होंगे। वर्तमान में हरियाणा में अटल भूजल योजना में क्षमता निर्माण विशेषज्ञ के तौर पर काम कर रहीं डा. भक्ति बताती हैं कि उपयोग सीमित करने और उपयोग हो चुके जल को संरक्षित करना होगा।

उप्र में सोनभद्र के गोविंदपुर गांव में महिलाओं संग चर्चा करतीं डा. भक्ति लता देवी (बाएं से पांचवीं) ● सौ. स्वयं

आने वाले समय में सबको अपने लिए जल की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। हम एक सरकारी एजेंसी पर निर्भर नहीं रह सकते कि पानी वही देगी। अत: हम अपनी आवश्यकताओं को पहचानें और जल संचयन के रास्ते पर चलें।

डा. भक्ति लता देवी, जल प्रहरी पुरस्कार से सम्मानित

जल चैंपियन भी होंगे तैयार: बेंगलुरू में भी डा. भक्ति ने इस स्कोरकार्ड विधि को सफलतापूर्वक संचालित किया है। इसके अलावा उनकी संस्था जलस्मृति स्थानीय समुदाय को संगठित करने के लिए सामुदायिक जल चैंपियन भी तैयार करती है। सोसायटियों में सामुदायिक चैंपियन तैयार कर उन्हें जल संरक्षण के लिए कार्ययोजना दी जाती है। समय से सही प्रयास करने पर इन चैंपियंस को तय पुरस्कार राशि भी मिलती है। अब डा. भक्ति लता देवी दिल्ली के दस शिक्षण संस्थानों में भी इस स्कोरकार्ड विधि का उपयोग करेंगी।

I/158429/2024